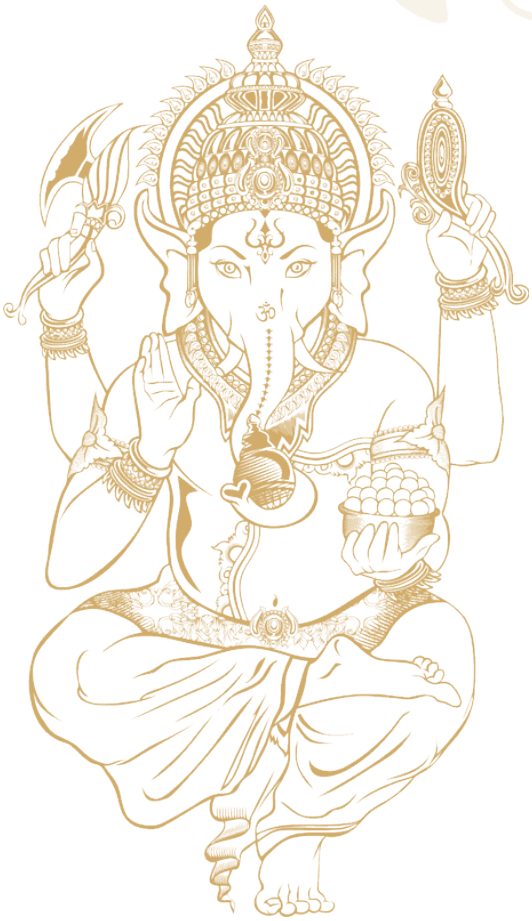

Ramesh mehta

13 Sep 1961

02:15 PM

Sojat Road

Model: Web-MyKundli

Order No: 120821901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**13/09/1961**
दिन	बुधवार
जन्म समय	**14:15:00 घंटे**
इष्ट	19:48:27 घटी
स्थान	**Sojat Road**
राज्य	Rajasthan
देश	India

अक्षांश	25:48:00 उत्तर
रेखांश	73:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	13:40:16 घंटे
वेलान्तर	00:03:57 घंटे
साम्पातिक काल	13:08:42 घंटे
सूर्योदय	06:19:37 घंटे
सूर्यास्त	18:41:29 घंटे
दिनमान	12:21:53 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	27:00:02 सिंह
लग्न के अंश	11:22:46 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	धनु - गुरु
राशि-स्वामी	**तुला - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**चित्रा - 3**
नक्षत्र स्वामी	मंगल
योग	ब्रह्म
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रा-राकेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1883	भाद्रपद	22
पंजाबी	संवत : 2018	भाद्रपद	29
बंगाली	सन् : 1368	भाद्रपद	28
तमिल	संवत : 2018	आवनी	29
केरल	कोल्लम : 1137	चिगंम	28
नेपाली	संवत : 2018	भाद्रपद	29
चैत्रादि	संवत : 2018	भाद्रपद	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2018	भाद्रपद	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 13:44:06
जन्म तिथि _____: 4
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: चित्रा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 20:51:06 घंटे
जन्म योग _____: चित्रा
सूर्योदय कालीन योग ____: ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____: 19:46:36 घंटे
जन्म योग _____: ब्रह्म
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 13:44:06 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 48:13:52
भभोग _____: 64:44:09
भोग्य दशा काल _____: मंगल 1 वर्ष 9 मा 16 दि

घात चक्र

मास _____: माघ
तिथि _____: 4-9-14
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: शतभिषा
योग _____: शुक्ल
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: कन्या
सूर्य _____: कन्या
चन्द्र _____: धनु
मंगल _____: तुला
बुध _____: कर्क
गुरु _____: वृश्चिक
शुक्र _____: धनु
शनि _____: सिंह
राहु _____: मकर

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

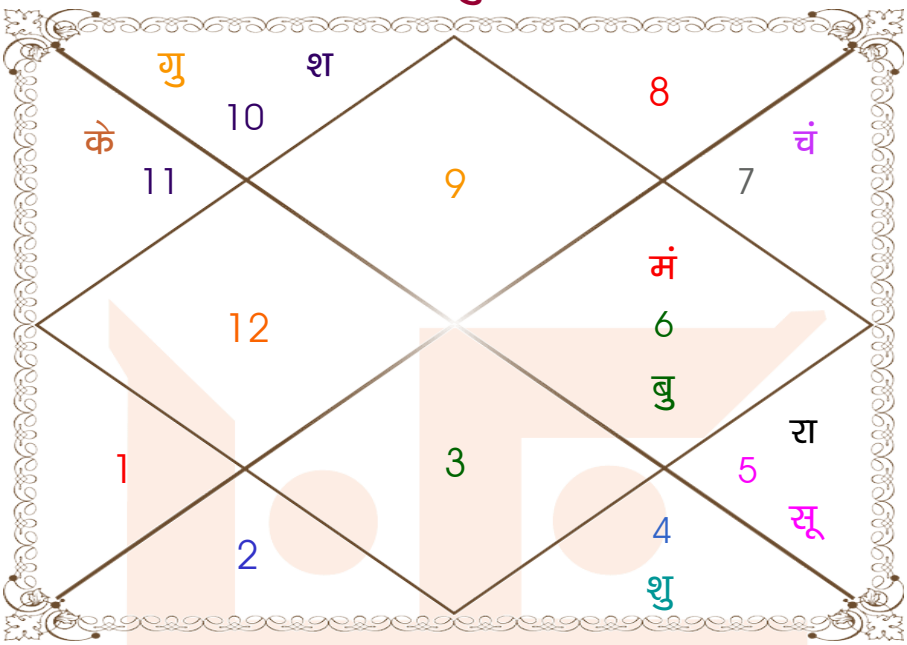

चन्द्र कुंडली

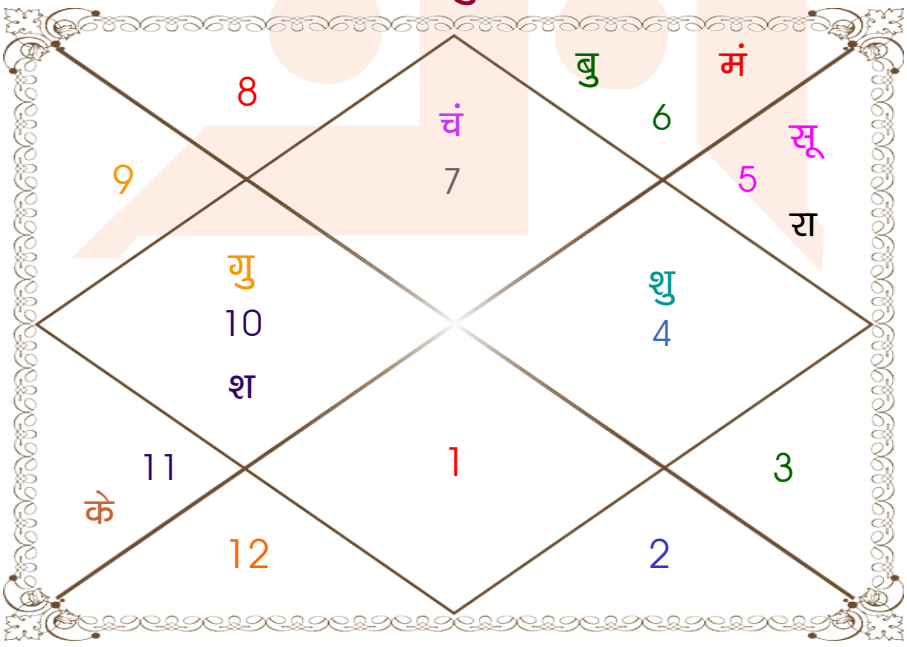

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

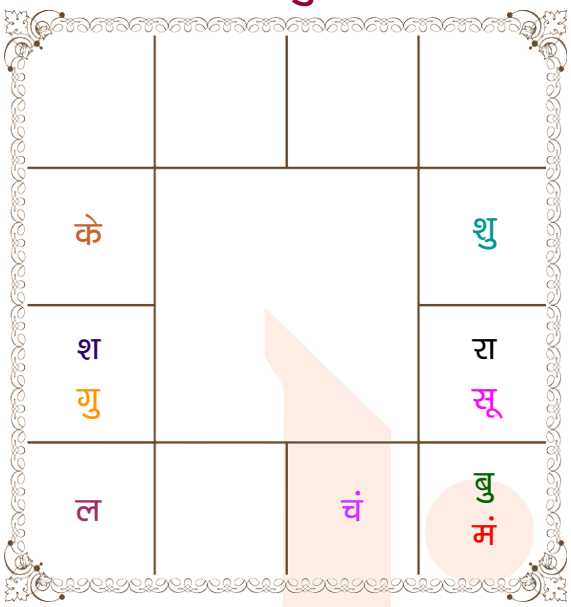

लग्न कुंडली

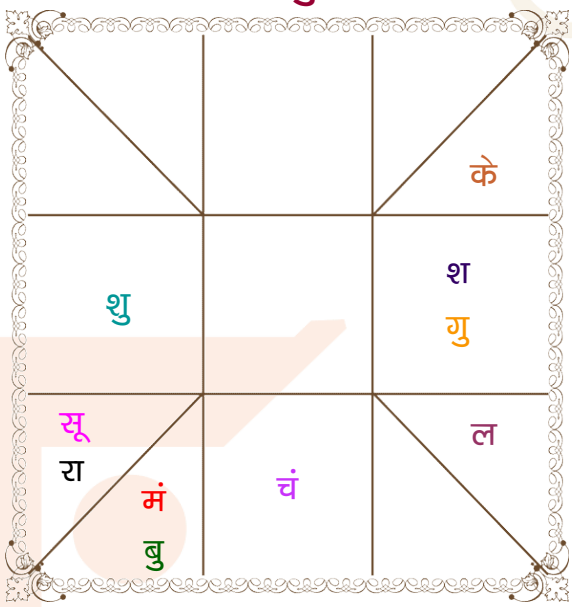

विंशोत्तरी
मंगल 1वर्ष 9मा 16दि

मंगल

13/09/1961

30/06/2076

मंगल	01/07/1963
राहु	01/07/1981
गुरु	01/07/1997
शनि	30/06/2016
बुध	01/07/2033
केतु	30/06/2040
शुक्र	30/06/2060
सूर्य	01/07/2066
चन्द्र	30/06/2076

योगिनी
मंगला 0वर्ष 3मा 2दि

संकटा

16/12/2024

16/12/2032

संकटा	26/09/2026
मंगला	16/12/2026
पिंगला	27/05/2027
धान्या	26/01/2028
भ्रामरी	16/12/2028
भद्रिका	25/01/2030
उल्का	27/05/2031
सिद्धा	16/12/2032

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	11:22:46	338:20:32	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	---
सूर्य			सिंह	27:00:02	00:58:27	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	स्वराशि
चंद्र			तुला	03:14:45	12:24:29	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	सम राशि
मंगल			कन्या	24:21:09	00:39:33	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	शत्रु राशि
बुध			कन्या	19:15:22	01:24:26	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
गुरु	व		मक	04:10:12	00:02:00	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	नीच राशि
शुक्र			कर्क	24:15:37	01:12:03	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	शत्रु राशि
शनि	व		मक	00:05:12	00:01:24	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	स्वराशि
राहु	व		सिंह	03:43:59	00:03:37	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	शत्रु राशि
केतु	व		कुंभ	03:43:59	00:03:37	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			सिंह	04:21:37	00:03:32	मघा	2	10	सूर्य	केतु	चंद्र	---
नेप			तुला	15:59:33	00:01:37	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
प्लूटो			सिंह	14:58:32	00:02:02	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव			कन्या	25:17:49	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:19:10

लग्न-चलित

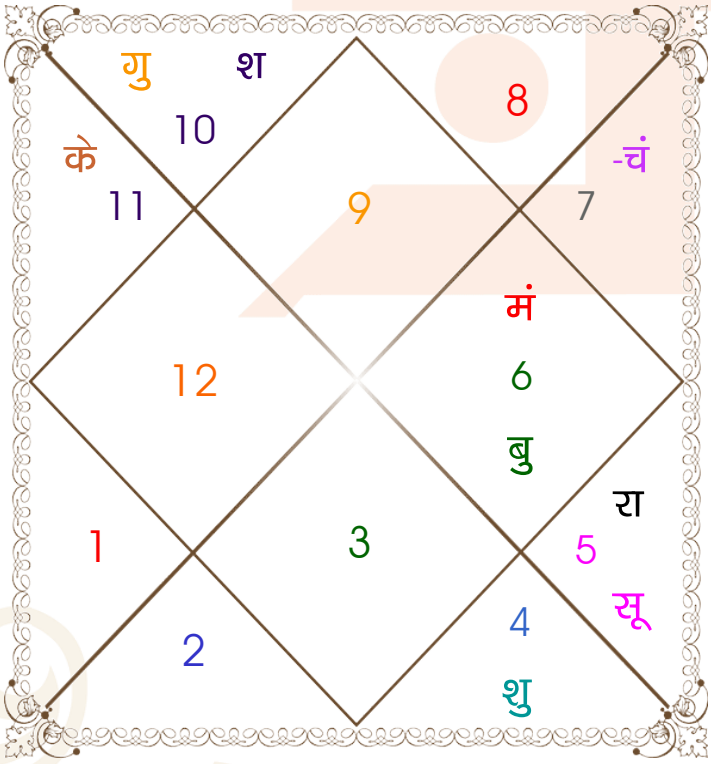

चन्द्र कुंडली

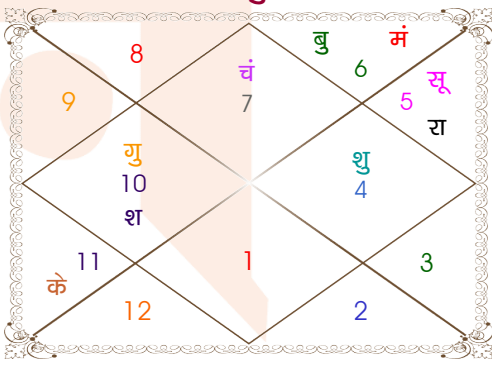

नवमांश कुंडली

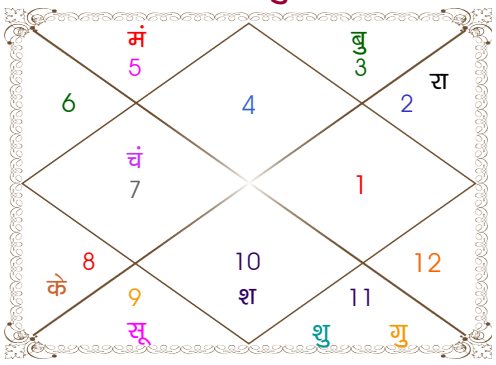

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृश्चिक	28:41:57	धनु	11:22:46
2	धनु	28:41:57	मकर	16:01:07
3	कुम्भ	03:20:18	कुम्भ	20:39:28
4	मीन	07:58:39	मीन	25:17:49
5	मेष	07:58:39	मेष	20:39:28
6	वृष	03:20:18	वृष	16:01:07
7	वृष	28:41:57	मिथुन	11:22:46
8	मिथुन	28:41:57	कर्क	16:01:07
9	सिंह	03:20:18	सिंह	20:39:28
10	कन्या	07:58:39	कन्या	25:17:49
11	तुला	07:58:39	तुला	20:39:28
12	वृश्चिक	03:20:18	वृश्चिक	16:01:07

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	11:22:46
2	मकर	15:21:56
3	कुम्भ	21:42:44
4	मीन	25:17:49
5	मेष	23:30:41
6	वृष	17:51:26
7	मिथुन	11:22:46
8	कर्क	15:21:56
9	सिंह	21:42:44
10	कन्या	25:17:49
11	तुला	23:30:41
12	वृश्चिक	17:51:26

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली

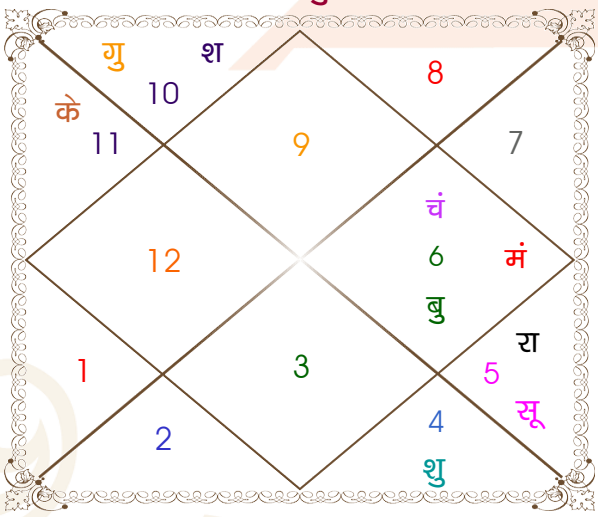

भाव कुंडली

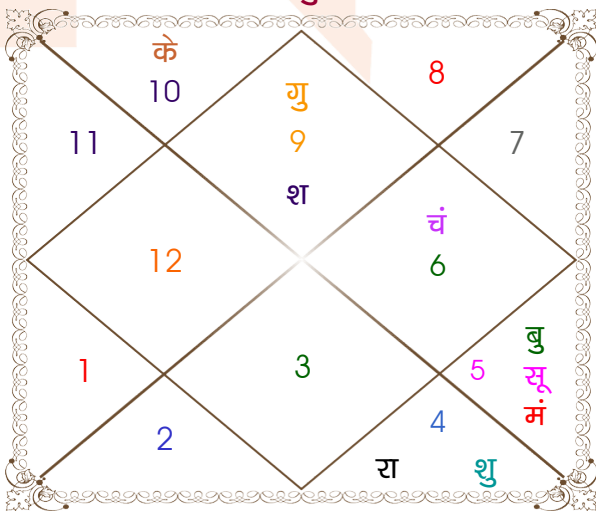

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 9 मास 16 दिन

मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
13/09/1961		01/07/1963		01/07/1981		01/07/1997		30/06/2016	
01/07/1963		01/07/1981		01/07/1997		30/06/2016		01/07/2033	
	00/00/0000	राहु	13/03/1966	गुरु	19/08/1983	शनि	03/07/2000	बुध	27/11/2018
	00/00/0000	गुरु	06/08/1968	शनि	01/03/1986	बुध	13/03/2003	केतु	24/11/2019
	00/00/0000	शनि	13/06/1971	बुध	06/06/1988	केतु	21/04/2004	शुक्र	24/09/2022
	00/00/0000	बुध	30/12/1973	केतु	13/05/1989	शुक्र	22/06/2007	सूर्य	31/07/2023
	00/00/0000	केतु	18/01/1975	शुक्र	12/01/1992	सूर्य	03/06/2008	चंद्र	30/12/2024
	13/09/1961	शुक्र	17/01/1978	सूर्य	30/10/1992	चंद्र	02/01/2010	मंगल	27/12/2025
शुक्र	25/07/1962	सूर्य	12/12/1978	चंद्र	01/03/1994	मंगल	11/02/2011	राहु	16/07/2028
सूर्य	30/11/1962	चंद्र	12/06/1980	मंगल	05/02/1995	राहु	18/12/2013	गुरु	21/10/2030
चंद्र	01/07/1963	मंगल	01/07/1981	राहु	01/07/1997	गुरु	30/06/2016	शनि	01/07/2033

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
01/07/2033		30/06/2040		30/06/2060		01/07/2066		30/06/2076	
30/06/2040		30/06/2060		01/07/2066		30/06/2076		00/00/0000	
केतु	27/11/2033	शुक्र	31/10/2043	सूर्य	18/10/2060	चंद्र	01/05/2067	मंगल	26/11/2076
शुक्र	27/01/2035	सूर्य	30/10/2044	चंद्र	19/04/2061	मंगल	30/11/2067	राहु	15/12/2077
सूर्य	04/06/2035	चंद्र	01/07/2046	मंगल	24/08/2061	राहु	31/05/2069	गुरु	21/11/2078
चंद्र	03/01/2036	मंगल	31/08/2047	राहु	19/07/2062	गुरु	30/09/2070	शनि	31/12/2079
मंगल	31/05/2036	राहु	31/08/2050	गुरु	07/05/2063	शनि	30/04/2072	बुध	27/12/2080
राहु	18/06/2037	गुरु	01/05/2053	शनि	18/04/2064	बुध	30/09/2073	केतु	25/05/2081
गुरु	25/05/2038	शनि	30/06/2056	बुध	23/02/2065	केतु	01/05/2074	शुक्र	13/09/2081
शनि	04/07/2039	बुध	01/05/2059	केतु	01/07/2065	शुक्र	31/12/2075		00/00/0000
बुध	30/06/2040	केतु	30/06/2060	शुक्र	01/07/2066	सूर्य	30/06/2076		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 1 वर्ष 9 मा 12 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र	
27/12/2025		16/07/2028		21/10/2030		01/07/2033		27/11/2033	
16/07/2028		21/10/2030		01/07/2033		27/11/2033		27/01/2035	
राहु	16/05/2026	गुरु	03/11/2028	शनि	26/03/2031	केतु	09/07/2033	शुक्र	06/02/2034
गुरु	17/09/2026	शनि	14/03/2029	बुध	12/08/2031	शुक्र	03/08/2033	सूर्य	27/02/2034
शनि	12/02/2027	बुध	09/07/2029	केतु	09/10/2031	सूर्य	11/08/2033	चंद्र	04/04/2034
बुध	23/06/2027	केतु	27/08/2029	शुक्र	21/03/2032	चंद्र	23/08/2033	मंगल	28/04/2034
केतु	17/08/2027	शुक्र	12/01/2030	सूर्य	09/05/2032	मंगल	01/09/2033	राहु	01/07/2034
शुक्र	19/01/2028	सूर्य	22/02/2030	चंद्र	30/07/2032	राहु	23/09/2033	गुरु	27/08/2034
सूर्य	06/03/2028	चंद्र	02/05/2030	मंगल	25/09/2032	गुरु	13/10/2033	शनि	03/11/2034
चंद्र	22/05/2028	मंगल	19/06/2030	राहु	19/02/2033	शनि	06/11/2033	बुध	02/01/2035
मंगल	16/07/2028	राहु	21/10/2030	गुरु	01/07/2033	बुध	27/11/2033	केतु	27/01/2035

केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु	
27/01/2035		04/06/2035		03/01/2036		31/05/2036		18/06/2037	
04/06/2035		03/01/2036		31/05/2036		18/06/2037		25/05/2038	
सूर्य	02/02/2035	चंद्र	21/06/2035	मंगल	11/01/2036	राहु	27/07/2036	गुरु	03/08/2037
चंद्र	13/02/2035	मंगल	04/07/2035	राहु	03/02/2036	गुरु	17/09/2036	शनि	26/09/2037
मंगल	20/02/2035	राहु	05/08/2035	गुरु	23/02/2036	शनि	16/11/2036	बुध	13/11/2037
राहु	12/03/2035	गुरु	02/09/2035	शनि	17/03/2036	बुध	10/01/2037	केतु	03/12/2037
गुरु	29/03/2035	शनि	06/10/2035	बुध	07/04/2036	केतु	01/02/2037	शुक्र	29/01/2038
शनि	18/04/2035	बुध	05/11/2035	केतु	16/04/2036	शुक्र	06/04/2037	सूर्य	15/02/2038
बुध	06/05/2035	केतु	18/11/2035	शुक्र	11/05/2036	सूर्य	25/04/2037	चंद्र	15/03/2038
केतु	13/05/2035	शुक्र	23/12/2035	सूर्य	18/05/2036	चंद्र	27/05/2037	मंगल	04/04/2038
शुक्र	04/06/2035	सूर्य	03/01/2036	चंद्र	31/05/2036	मंगल	18/06/2037	राहु	25/05/2038

केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
25/05/2038		04/07/2039		30/06/2040		31/10/2043		30/10/2044	
04/07/2039		30/06/2040		31/10/2043		30/10/2044		01/07/2046	
शनि	28/07/2038	बुध	24/08/2039	शुक्र	19/01/2041	सूर्य	18/11/2043	चंद्र	20/12/2044
बुध	24/09/2038	केतु	15/09/2039	सूर्य	21/03/2041	चंद्र	19/12/2043	मंगल	24/01/2045
केतु	17/10/2038	शुक्र	14/11/2039	चंद्र	01/07/2041	मंगल	09/01/2044	राहु	26/04/2045
शुक्र	24/12/2038	सूर्य	02/12/2039	मंगल	10/09/2041	राहु	04/03/2044	गुरु	16/07/2045
सूर्य	13/01/2039	चंद्र	01/01/2040	राहु	11/03/2042	गुरु	21/04/2044	शनि	20/10/2045
चंद्र	16/02/2039	मंगल	22/01/2040	गुरु	21/08/2042	शनि	18/06/2044	बुध	14/01/2046
मंगल	11/03/2039	राहु	17/03/2040	शनि	01/03/2043	बुध	09/08/2044	केतु	19/02/2046
राहु	11/05/2039	गुरु	04/05/2040	बुध	21/08/2043	केतु	30/08/2044	शुक्र	31/05/2046
गुरु	04/07/2039	शनि	30/06/2040	केतु	31/10/2043	शुक्र	30/10/2044	सूर्य	01/07/2046

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 6, 3
शत्रु अंक	7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धन, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	98%	भाग्योदय
गोमेद	राहु	81%	भाग्योदय
मूंगा	मंगल	70%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख, कम खर्च
नीलम	शनि	64%	धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	63%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
लहसुनिया	केतु	55%	पराक्रम, धन
मोती	चंद्र	3%	हानि, दुर्घटना
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग, हानि

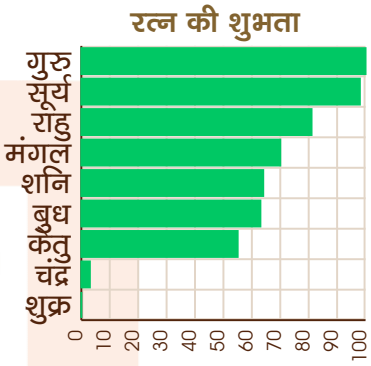

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	01/07/1963	100%	16%	83%	50%	100%	0%	64%	69%	61%
राहु	01/07/1981	86%	0%	58%	63%	100%	12%	70%	94%	34%
गुरु	01/07/1997	100%	16%	77%	50%	100%	0%	64%	81%	55%
शनि	30/06/2016	86%	0%	58%	69%	100%	12%	76%	88%	34%
बुध	01/07/2033	100%	0%	70%	75%	100%	12%	64%	81%	55%
केतु	30/06/2040	86%	0%	77%	63%	100%	12%	51%	69%	67%
शुक्र	30/06/2060	86%	0%	70%	69%	100%	25%	70%	88%	61%
सूर्य	01/07/2066	100%	16%	77%	63%	100%	0%	51%	69%	34%
चंद्र	30/06/2076	100%	28%	70%	69%	100%	0%	64%	69%	34%

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/09/1961-17/09/1961	08/10/1961-27/01/1964	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/04/1971-10/06/1973	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	व्यावसाय
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	धनार्जन
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	व्यय

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्धे करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक गुणी, चंचलबुद्धि, सन्तति और सम्पत्ति से युक्त, सुखी, यशस्वी, लोकप्रिय, दीर्घायु, मन्त्रज्ञ, परदेशप्रिय एवं राज्यकार्यदक्ष होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

मंगल

दसवें भाव में मंगल हो तो जातक कुलदीपक, स्वाभिमानी, सन्तति कष्टवाला, धनवान्, सुखी, उत्तम-वाहनों से सुखी एवं यशस्वी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(30/06/2016 - 01/07/2033)

बुध की महादशा 30/06/2016 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 01/07/2033 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थित अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियाँ के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अत्ति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। अपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(27/12/2025 - 16/07/2028)

आपके लिए बुध की महादशा 30/06/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/12/2025 को प्रारंभ होकर 16/07/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप भौतिक सुख-साधनों से संपन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। उच्चपद प्राप्त होगा, लक्ष्य की ओर एकाग्रचित्त रहेंगे। लघु यात्राओं, लेखन, प्रकाशन, छोटे भाई-बहनों से लाभ होगा। आत्म-विश्वास उत्तम रहेगा, बाधाओं के बावजूद आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। प्रसिद्ध बनेंगे। पड़ौसियों और रिश्तेदारों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता में आत्मविश्वास उत्तम होगा। माता धनी और सम्मानित होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए विवाह, साझेदारी से लाभ, यात्रा, व्यापार का विस्तार, धनलाभ, आर्थिक प्रगति के अवसर और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है, धनी बनेंगे, नाम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे; यात्राएं होंगी। व्यापारियों का लाभ उत्तम रहेगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :- बुध - गुरु
(16/07/2028 - 21/10/2030)

आपके लिए बुध की महादशा 30/06/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 16/07/2028 को प्रारंभ होकर 21/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख उपलब्ध होंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन प्राप्त होंगे। शिक्षा उत्तम होगी; धन का संचय होगा। साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। विरासत में धन मिल सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अचानक धन और संपत्ति मिल सकते हैं। अध्यात्म और दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। अच्छी नौकरी मिल सकती है। सफलता और समृद्धि प्राप्त होंगी। भाग्य साथ देगा, धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को स्पर्धियों पर

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com

विजय मिलेगी। माता धनी और प्रसन्न होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, धन का संचय, अध्यात्म में रुचि, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा और उत्तम मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे; माता से लाभ होगा, सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है ; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- बुध - शनि
(21/10/2030 - 01/07/2033)

आपके लिए बुध की महादशा 30/06/2016 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 21/10/2030 को प्रारंभ होकर 01/07/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आपकी आय अच्छी होगी। पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। शिक्षा में प्रगति होगी। प्रबंधन शक्ति उत्तम होगी; कार्यक्षमता बढ़ेगी। विरासत और वसीयत से लाभ हो सकता है। तंत्र, मंत्र आदि में रुचि हो सकती है। अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी बनेंगे। भूमि और वाहन का सुख होगा; निवेश से लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। समृद्धि बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा; अचानक धनलाभ होगा। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रोन्नति होगी, उच्चपद मिलेगा। माता धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, धन का संचय, अचल संपत्ति की प्राप्ति और उत्तम शिक्षा का संकेत हैं।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी, उनके अनेक प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी और सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो परिश्रम करेंगे; कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और चेहरे की मामूली समस्या हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, तिल, और काले वस्त्र दान में दें।

Rajesh ahuja (rajusai)
47, 8th Main Rd, Mahaganapathi Nagar, 6th phase 1st stage, Mahaganapathi Nagar, Rajajinagar, Bengaluru, Karnataka 560079, India
9740384177
rajeshtahuja1970@gmail.com